भारतीय नाटक और लोक-परंपरा - एक विमर्श

लतीफ़ अहमद बी.[1] & शेख ओवैस बाशा छात्र[2]

[1]सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग सेंट फ्रांसिस कॉलेज, कोरमंगला, बेंगलुरु

[2]बी.कॉम. (पंचम सेमेस्टर) सेंट फ्रांसिस कॉलेज, कोरमंगला, बेंगलुरु

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18368523

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध आलेख भारतीय संस्कृति की आधारशिला माने जाने वाले लोक नाटकों और शास्त्रीय नाट्य परंपरा के अंतर्संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। यह आलेख 'नाट्यशास्त्र' के सिद्धांतों से लेकर भारत की विविध क्षेत्रीय विधाओं—जैसे नौटंकी, यक्षगान और बिदेसिया—की विकास यात्रा और उनकी विशेषताओं को रेखांकित करता है। शोध में हबीब तनवीर और 'इप्टा' द्वारा लोक तत्वों को आधुनिक रंगमंच से जोड़ने के प्रयासों का मूल्यांकन किया गया है। अंततः, यह अध्ययन भूमंडलीकरण के दौर में लोक-परंपराओं के समक्ष उपस्थित अस्तित्व के संकट और डिजिटल माध्यमों द्वारा उनके संरक्षण की आवश्यकता पर बल देता है, ताकि भारतीय 'लोक मानस' को जीवित रखा जा सके।

KEYWORDS:

भारतीय लोक नाटक, नाट्यशास्त्र, सांस्कृतिक विरासत, क्षेत्रीय रंगमंच, डिजिटल संरक्षण.

भूमिका

भारतीय नाट्य परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम कला विधाओं में से एक है। जहाँ 'नाट्यशास्त्र' ने इसे शास्त्रीय आधार प्रदान किया, वहीं लोक-परंपराओं ने इसे जीवंतता और जन-सुलभता दी। प्रस्तुत आलेख में भारतीय लोक नाटकों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, क्षेत्रीय स्वरूपों, शास्त्रीय संबंधों और समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।

भारतीय नाटक और लोक परंपरा

भारतीय संस्कृति में कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि

जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति रही है। 'लोक' शब्द का अर्थ है—जनसामान्य का वह समूह जो अपनी विशिष्ट परंपराओं, विश्वासों और कलाओं के माध्यम से अपनी पहचान बनाए रखता है। भारतीय नाटक की यात्रा 'भरतमुनि के नाट्यशास्त्र'[1] से शुरू होकर गाँवों की चौपालों तक फैली हुई है। लोक-परंपरा ने समय-समय पर शास्त्रीयता के कठोर अनुशासन को लचीला बनाया और उसे आम आदमी के सुख-दुख से जोड़ा। बिना किसी भव्य मंच (Set) के, खुले आकाश के नीचे होने वाले ये नाटक भारतीय समाज के वास्तविक दर्पण रहे हैं।

भारतीय नाट्य परंपरा का उद्भव और विकास

भारतीय नाट्य परंपरा को अक्सर 'मार्गी' (शास्त्रीय) और 'देशी' (लोक) के दो खानों में बाँटकर देखा जाता है, किंतु सूक्ष्म विश्लेषण करने पर यह विभाजन कृत्रिम प्रतीत होता है। यदि शास्त्रीय नाट्य परंपरा भारतीय संस्कृति का 'शिखर' है, तो लोक परंपरा उसकी 'आधारशिला' है। दोनों के मध्य विरोध नहीं, बल्कि निरंतर संवाद की स्थिति रही है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र स्वयं लोक के सूक्ष्म निरीक्षण से उपजा है, जो यह सिद्ध करता है कि लोक ही वह उर्वर भूमि है जहाँ से शास्त्रीयता के अंकुर फूटते हैं। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में 'धर्मी' के दो भेद किए हैं—'लोकधर्मी' और 'नाट्यधर्मी'।[2] मध्यकाल में जब संस्कृत नाटकों का ह्रास होने लगा, तब लोक-परंपराओं ने ही भारतीय नाट्य विरासत को सुरक्षित रखा। रासलीला, रामलीला और विभिन्न लोक गाथाओं ने रंगमंच को मंदिरों और खेतों तक पहुँचाया।

लोक नाटकों की प्रमुख विशेषताएँ

लोक नाटक शास्त्रीय नाटकों से कुछ बुनियादी आधारों पर भिन्न हैं, यही भिन्नता इनकी विशेषता है:

- मुक्त मंच (Open Stage): इसमें दर्शकों और अभिनेता के बीच सीधा संवाद होता है।
- संगीत और नृत्य की प्रधानता: लोक नाटक में अवनद्ध वाद्यों[3] का विशेष महत्व होता है।
- आशु-संवाद (Improvisation): अभिनेता लिखित पटकथा के बजाय मौके पर ही तत्कालीन परिस्थितियों पर संवाद गढ़ते हैं।[4]
- सामूहिकता: यह किसी एक व्यक्ति की कला न होकर पूरे समुदाय की सहभागिता है।

भारत की क्षेत्रीय नाट्य शैलियाँ

नाट्य शैली	क्षेत्र	मुख्य विशेषता
नौटंकी	उत्तर प्रदेश	यह उत्तर प्रदेश की सबसे लोकप्रिय विधा है, जिसमें ऊँचे स्वर में संवाद अदायगी और नगाड़े की थाप पर लोक कथाओं का मंचन वीर और श्रृंगार रस से होता है।
स्वांग	हरियाणा और पंजाब	हरियाणा और पंजाब में प्रचलित इस शैली में संगीत और अभिनय के माध्यम से सामाजिक व पौराणिक कहानियाँ सुनाई जाती हैं।
रासलीला	ब्रज क्षेत्र	यह मुख्य रूप से ब्रज क्षेत्र में भगवान कृष्ण की बाल-लीलाओं और राधा-कृष्ण के प्रेम को समर्पित एक आध्यात्मिक नाट्य है।
रामलीला	उत्तर भारत	दशहरे के अवसर पर पूरे उत्तर भारत में भगवान राम के जीवन चरित्र का मंचन किया जाता है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है।
भांड पाथेर	कश्मीर	कश्मीर का यह पारंपरिक व्यंग्य नाट्य है, जिसमें कृषि और सामाजिक जीवन की समस्याओं को हास्य के माध्यम से दर्शाया जाता है।
भगत	उत्तर प्रदेश	यह उत्तर प्रदेश की एक प्राचीन आध्यात्मिक शैली है, जिसमें गायन और अभिनय द्वारा धार्मिक संतों की कहानियाँ प्रस्तुत की जाती हैं।
तमाशा	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र की इस ऊर्जावान शैली में लावणी नृत्य और 'विदूषक' के तीखे संवाद दर्शकों का मनोरंजन करते हैं।
भवाई	गुजरात और राजस्थान	गुजरात और राजस्थान का यह नाट्य रूप अपने जटिल नृत्य कौशल और सामाजिक बुराइयों पर चोट करने वाले व्यंग्यों के लिए प्रसिद्ध है।
माच	मध्य प्रदेश	मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र का यह खुला रंगमंच है, जिसमें ढोलक और सारंगी की धुनों पर ऐतिहासिक गाथाएं गाई जाती हैं।
ख्याल	राजस्थान	राजस्थान की इस शैली में विभिन्न 'घरानों' द्वारा गायन प्रधान नाटक प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनमें वीरता और प्रेम की प्रधानता होती है।
यक्षगान	कर्नाटक	कर्नाटक की इस भव्य शैली में भारी वेशभूषा, मुकुट और तेज संगीत के साथ रामायण व महाभारत के प्रसंग दिखाए जाते हैं।[5]
थेय्यम	केरल	केरल का यह एक अनुष्ठानिक नाट्य है, जिसमें कलाकार देवी-देवताओं का रूप धारण कर अद्भुत नृत्य और भक्ति का प्रदर्शन करते हैं।

कूड़ियट्टम	केरल	केरल की यह २,००० साल पुरानी शैली यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित है, जो संस्कृत नाटकों के अभिनय की प्राचीनतम विधा है।
वीथी नाटकम	आंध्र प्रदेश	आंध्र प्रदेश की इस शैली का प्रदर्शन खुले रास्तों या गलियों में होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य लोक-शिक्षा और मनोरंजन है।
तेरुक्कूत्तू	तमिलनाडु	तमिलनाडु का यह 'सड़क नाट्य' है, जो अक्सर वर्षा की देवी 'द्रौपदी अम्मन' के वार्षिक उत्सवों के दौरान आयोजित होता है।
जात्रा	बंगाल और ओडिशा	बंगाल और ओडिशा का यह एक संगीत-प्रधान नाट्य है, जिसमें कलाकार अपनी ऊँची आवाज और भावुक अभिनय से खुले मंच पर समां बांध देते हैं।
बिदेसिया	बिहार	भिखारी ठाकुर द्वारा स्थापित यह भोजपुरी नाट्य 'पलायन' के दर्द और सामाजिक कुरीतियों को बड़ी मार्मिकता से प्रस्तुत करता है।[6]
अंकिया नाट	असम	असम की यह शैली महापुरुष शंकरदेव की देन है, जिसमें 'ब्रजावली' भाषा के प्रयोग द्वारा वैष्णव भक्ति का प्रचार किया जाता है।
छऊ	झारखंड,उड़ीसा पश्चिम बंगाल	यह एक मुखौटा नृत्य-नाट्य है जिसमें मार्शल आर्ट्स (युद्ध कला) और नृत्य के माध्यम से पौराणिक कथाएं दिखाई जाती हैं।
संकीर्तन	मणिपुर	यह मणिपुर की धार्मिक अभिव्यक्ति है जिसमें ढोल और झांझ के साथ गाते हुए कृष्ण भक्ति के प्रसंगों का नृत्य-नाट्य होता है।
कठपुतली	राजस्थान	राजस्थान की इस प्राचीन विधा में धागों के माध्यम से लकड़ी की पुतलियों को नचाकर ऐतिहासिक वीरगाथाएं सुनाई जाती हैं।
करियाला	हिमाचल प्रदेश	हिमाचल प्रदेश का यह सबसे लोकप्रिय लोक नाट्य है, जिसमें हास्य-व्यंग्य के छोटे-छोटे प्रहसन पेश किए जाते हैं।
पांडवानी	छत्तीसगढ़	छत्तीसगढ़ की इस अद्भुत शैली में तीजन बाई जैसे कलाकार तंबूरे के साथ अकेले ही महाभारत की कथा का वीर रस में गायन करते हैं।
दशावतार	कोंकण और गोवा	कोंकण और गोवा के मंदिरों में प्रचलित इस विधा में भगवान विष्णु के दस अवतारों की कथाओं का मंचन किया जाता है।

शास्त्रीय और लोक नाटक का अंतर्संबंध

शास्त्रीय और लोक नाटक केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि 'सामाजिक चेतना' का माध्यम रहे हैं। आधुनिक भारतीय रंगमंच के पुरोधाओं जैसे

हबीब तनवीर[7] ने लोक तत्वों का प्रयोग कर भारतीय नाटक को वैश्विक पहचान दी। उन्होंने छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों के साथ 'चरणदास चोर' जैसे नाटकों का सृजन किया, जहाँ लोक और आधुनिक तकनीक का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इसी प्रकार 'इप्टा' (IPTA)[8] जैसे संगठनों ने लोक कलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक चेतना से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया है जैसे-

- धार्मिक एकता: रामलीला और कृष्णलीला ने धर्म को सरल रूप में जन-जन तक पहुँचाया।
- कुरीतियों पर प्रहार: बिदेसिया और नौटंकी जैसे नाटकों ने दहेज प्रथा, छुआछूत और ज़मींदारी प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाई।
- स्वतंत्रता आंदोलन: औपनिवेशिक काल में लोक कलाकारों ने गीतों और रूपकों के माध्यम से जनता में देशभक्ति का संचार किया।

आधुनिकता, भूमंडलीकरण और चुनौतियाँ और भविष्य की राह

आज के डिजिटल और भूमंडलीकरण के युग में लोक-परंपराओं के सामने अस्तित्व का गहरा संकट है। सिनेमा और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के बढ़ते प्रभाव ने पारंपरिक लोक कलाकारों की आजीविका को सीधे तौर पर प्रभावित किया है, वहीं तीव्र शहरीकरण के कारण वह 'सामुदायिक परिवेश' भी बिखर रहा है जहाँ ये कलाएँ पनपती थीं। अक्सर व्यावसायिकता की होड़ में इन कलाओं के मूल स्वरूप के साथ भी छेड़छाड़ देखी जाती है। हालाँकि, इन चुनौतियों के बीच सरकारी संरक्षण और डिजिटल क्रांति एक नई उम्मीद जगाते हैं। लोक कलाओं के पुनरुद्धार के लिए निम्नलिखित कदम प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं:

1. डिजिटल संरक्षण: सरकार को एक राष्ट्रीय डिजिटल आर्काइव बनाना चाहिए जहाँ लुप्तप्राय शैलियों के उच्च-गुणवत्ता वाले प्रदर्शन सुरक्षित हों।
2. यूट्यूब का उपयोग: लोक कलाकारों को आधुनिक तकनीक का प्रशिक्षण देकर उन्हें यूट्यूब और सोशल मीडिया के माध्यम से वैश्विक दर्शकों से जोड़ना अनिवार्य है।
3. वर्चुअल प्लेटफॉर्म: क्षेत्रीय उत्सवों की 'लाइव स्ट्रीमिंग' और वर्चुअल फेस्टिवल्स के जरिए इन कलाकारों को न केवल पहचान मिलेगी, बल्कि विज्ञापनों के माध्यम से राजस्व भी प्राप्त होगा।
4. आर्थिक प्रोत्साहन: डिजिटल माध्यमों पर सक्रिय कलाकारों के लिए

'ई-स्कॉलरशिप' और प्रत्यक्ष लाभ (DBT) जैसी योजनाएँ उनकी आर्थिक रीढ़ बन सकती हैं।

5. पर्यटन और तकनीक: पर्यटन केंद्रों पर क्यूआर कोड के माध्यम से लोक कलाओं के विवरण और वीडियो उपलब्ध कराकर नई पीढ़ी को इनसे जोड़ा जा सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय नाटक और लोक-परंपरा का संबंध जड़ और वृक्ष जैसा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि लोक-परंपराओं को आधुनिक शिक्षा और तकनीक के साथ जोड़कर पुनर्जीवित किया जाए। लोक नाटक केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि हमारी वर्तमान सांस्कृतिक पहचान के रक्षक हैं। भारतीय लोक नाटक केवल मनोरंजन की एक विधा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की जीवंत संवाहिका हैं। जहाँ शास्त्रीय परंपराएँ व्याकरण और अनुशासन की शुद्धता बनाए रखती हैं, वहीं लोक नाटक अपनी सरलता और सामूहिकता से समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचते हैं। आज के तकनीकी युग में, जब हमारी पारंपरिक कलाएँ अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं, तब इन्हें मात्र 'अतीत की वस्तु' मानकर छोड़ देना हमारी ऐतिहासिक भूल होगी। आवश्यकता इस बात की है कि लोक कलाओं के मूल तत्वों को संरक्षित करते हुए उन्हें आधुनिक मंचों और डिजिटल माध्यमों के साथ समन्वित किया जाए। हबीब तनवीर जैसे प्रयोगों ने यह सिद्ध किया है कि यदि लोक तत्वों को सही दिशा मिले, तो वे वैश्विक मंच पर भी अपनी छाप छोड़ सकते हैं। अतः लोक नाटकों का संरक्षण केवल एक कला का संरक्षण नहीं, बल्कि उस भारतीय 'लोक मानस' का संरक्षण है, जिसमें भारत की आत्मा बसती है।

पाद-टिप्पणियाँ

1. भरतमुनि और नाट्यशास्त्र: भारतीय नाट्य विधा का आदि ग्रंथ, जो ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से दूसरी शताब्दी ईस्वी के मध्य रचा गया। इसमें नाटक को 'पंचम वेद' कहा गया है।
2. लोकधर्मी और नाट्यधर्मी: नाट्यशास्त्र के अनुसार, 'लोकधर्मी' वह विधा है जो स्वभाविक लोक व्यवहार पर आधारित होती है, जबकि 'नाट्यधर्मी' प्रतीकात्मक और कलात्मक होती है।
3. अवनद्ध वाद्य: लोक नाटकों में प्रयुक्त होने वाले चमड़े से मढ़े वाद्ययंत्र जैसे नगाड़ा, ढोलक और मृदंगम, जो प्रदर्शन की लय निर्धारित करते हैं।
4. आशु-संवाद: लोक नाटकों की वह विशेषता जहाँ अभिनेता समसामयिक घटनाओं पर कटाक्ष करने के लिए तात्कालिक संवादों का प्रयोग करते हैं।
5. यक्षगान की वेशभूषा: कर्नाटक के इस नाटक में विशेष प्रकार के किरीट (मुकुट) और भारी श्रृंगार का प्रयोग किया जाता है।
6. भिखारी ठाकुर (1887-1971): जिन्हें 'भोजपुरी का शेक्सपियर' कहा जाता है। उनके नाटक 'बिदेसिया' ने लोक नाट्य को सामाजिक सुधार का माध्यम बनाया।
7. हबीब तनवीर (1923-2009): प्रसिद्ध नाटककार जिन्होंने 'नया थियेटर' की स्थापना की और लोक कलाकारों को मुख्यधारा के रंगमंच पर स्थान दिलाया।
8. इप्टा (IPTA): भारतीय जन नाट्य संघ, जिसने 1940 के दशक में लोक कलाओं को विचारधारा और जन-आंदोलन से जोड़ा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भरतमुनि. नाट्यशास्त्र.
2. कपिला वात्स्यायन. पारंपरिक भारतीय रंगमंच.
3. हबीब तनवीर. लोक रंगमंच और मेरा अनुभव.

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.